Std VI

हार की जीत

—सुदर्शन

शब्द -अर्थ

*इलाका-आस पास की जगह

* घृणा- नफ़रत

* कीर्ति- गुणगान

* अधीर - बेचैन

* विस्मय- अचम्भा

* चाप - आहट

*घोर- गहरी

1. बाबा भारती का घोड़ा कैसा था?

उत्तर- बाबा भारती के घोड़े का नाम 'सुल्तान' था। वह सफ़ेद रंग का, सुंदर और बलिष्ट था।उसकी चाल अनोखी और सरपट थी।

2. सुल्तान का नाम सुनकर डाकू ने क्या किया?

उत्तर- सुल्तान का नाम सुनकर डाकू खड्गसिंह के हृदय में उसे देखने की लालसा उमड़ पड़ी और वह बाबा भारती के मंदिर जा पहुँचा।

3. बाबा भारती ने घोड़े को किस प्रकार दिखाया?

उत्तर- बाबा भारती ने घोड़े को अत्यंत गर्व से दिखाया।

4. बाबा भारती क्यों डर गए?

उत्तर- सुंदर व बलवान सुल्तान को देखकर, खड्गसिंह मंत्रमुग्ध हो गया और उसने बाबा भारती से कहा कि वह घोड़ा ,बाबा भारती के पास न रहने देगा।इसलिए बाबा भारती सुल्तान को खोने के ख़याल से डर गए।

5. बाबा भारती अपने घोड़े की सेवा किस प्रकार करते थे?

उत्तर- बाबा भारती अपने घोड़े की सेवा बहुत मन और लगन से करते थे। भगवान भजन के बाद जो भी समय मिलता वो सुल्तान की देख-रेख में अर्पित कर देते।

6. खड्गसिंह कौन था?वह बाबा भारती के पास क्यों गया?

उत्तर- खड्गसिंह उस इलाके का मशहूर डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। वह बाबा भारती के पास उनके घोड़े सुल्तान को देखने के इरादे से पहुँचा।

7. उसने घोड़े को कैसे प्राप्त किया?

उत्तर- खड्गसिंह जानता था कि बाबा भारती सुल्तान को न ही बेचेंगे और न ही स्वेच्छा से देंगे, इसलिए उसने छल-कपट की नीति अपनाई।

एक दिन जब बाबा भारती अपने घोड़े पर चढ़कर घूमने निकले तो एक ग़रीब अपाहिज ने मदद की गुहार लगाई। उसने इल्तिजा की कि बाबा भारती उसे पास के गाँव छोड़ दें। दयावान बाबा भारती ने तरस खाकर उसे घोड़े पर बिठा लिया एवं स्वयं लगाम पकड़कर चलने लगे, परन्तु कुछ ही क्षण बाद लगाम उनके हाथ से खिंच गई और वह 'अपाहिज' तनकर घोड़े को दौड़ाता हुआ ले जाने लगा।

वह अपाहिज और कोई नहीं बल्कि डाकू खड्गसिंह ही था, जिसने धोखे से सुल्तान को बाबा भारती से छीन लिया था।

8. बाबा भारती ने खड्गसिंह से क्या कहा?

उत्तर- घोड़े को सरपट दौड़ाते हुए खड्गसिंह को रोककर, बाबा भारती ने उससे कहा कि वह इस घटना का ज़िक्र किसी से न करे, वरना कोई भी दीन-दुखियों की मदद नहीं करेगा।

9. बाबाजी की प्रार्थना का डाकू पर क्या असर पड़ा?

उत्तर- बाबा भारती की अद्भुत प्रार्थना का खड्गसिंह पर गहरा प्रभाव पड़ा। बाबा जी के शब्द उसके कानों में गूँजते रहे। उसे आभास हुआ कि बाबा भारती को सुल्तान को खोने का उतना दुख नहीं था, जितनी इस बात की चिंता थी कि इस घटना के बाद कोई दीन-दुखियों पर भरोसा नहीं करेगा। तब खड्ग सिंह को बाबा भारती की महानता का अहसास हुआ।

10. अस्तबल में घोड़े को पाकर बाबाजी को कैसा लगा?

उत्तर- अस्तबल में सुल्तान को वापस पाकर बाबाजी के हर्ष का ठिकाना न रहा। वह उससे लिपटकर ऐसे रोने लगे, मानो कोई पिता अपने वर्षों से बिछड़े पुत्र से मिल रहा हो।

11. बाबा भारती ने यह कब कहा व क्यों?

" अब दीन-दुखियों से कोई मुँह न मोड़ेगा।"

उत्तर- खड्ग सिंह के कठोर हृदय को भी बाबा भारती के शब्द इतना छू गए कि वह रात में , सुल्तान को अस्तबल में चुपके से बाँधकर चला गया। तब बाबा भारती के मन में एक संतोष की भावना जगी कि खड्गसिंह का हृदय परिवर्तन हो चुका है अब वह ऐसी ग़लती दुबारा नहीं करेगा और न ही दुनिया में कोई दीन दुखियों पर शक करेगा। अतः बाबा भारती ने ऐसा कहा।

12. "उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई।" आशय स्पष्ट करें।

उत्तर- जब बाबा भारती" अपाहिज" को अपने घोड़े पर बैठा कर ले जा रहे थे तो अचानक वह अपाहिज तनकर घोड़े पर बैठ गया और लगाम उनके हाथ से खींच ली। वह अपाहिज कोई और नहीं बल्कि डाकू खड्गसिंह ही

था जो उनके घोड़े को उनसे छीनने में सफल हो गया था , यह देख कर उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गयी।

13. इस कहानी के अंत में किसकी हार और किसकी जीत हुई?

उत्तर- बाबा भारती, खड्गसिंह की चालाकी के सामने हार गए थे और अपना प्रिय घोड़ा खो चुके थे, किन्तु उनके शब्दों का खड्गसिंह पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह उनके घोड़े को चुपचाप उन्हें लौटा गया क्योंकि वह बाबा भारती के निस्वार्थ बलिदान को समझ चुका था।

अतः अंत में बाबा भारती हार कर भी जीत गए और डाकू खड्गसिंह जीत कर भी हार गया।

इसलिए इस कहानी का नाम भी 'हार की जीत' है।